



आदिवासी परिवारों में बच्चों के पालन-पोषण के तरीके

कंचन कुमारी

मनोविज्ञान शोधार्थी, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़.

शोध-सार

बच्चों की परवरिश का तरीका किसी समुदाय में पीढ़ियों के साथ-साथ बदलता रहता है और यह संस्कृति व धर्म से प्रभावित होता है, जिससे रोजमर्रा के मामलों और जीवनशैली से जुड़े बुनियादी फैसलों पर असर पड़ता है। बच्चों की परवरिश के आधुनिक सिद्धांतों में इस बात पर जोर दिया गया है कि बच्चों को सामाजिक बनाने के लिए माता-पिता जो तरीके अपनाते हैं, उन्हें तय करने में परवरिश के लक्ष्यों की अहम भूमिका होती है। इस लेख में हमने आदिवासी परिवारों में परवरिश के अलग-अलग तरीकों और बच्चों पर उनके असर के बारे में चर्चा की है। पेरेंटिंग का मतलब है बच्चे के बचपन से लेकर बड़े होने तक उसके शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देना और उसमें मदद करना। इसमें बच्चे की परवरिश करने का काम शामिल है। बच्चों की परवरिश करना कभी भी आसान काम नहीं रहा है और अच्छी पेरेंटिंग ही अक्सर बच्चों को जिम्मेदार वयस्क बनाने में अहम भूमिका निभाती है। पेरेंटिंग के लिए समय, धैर्य, प्यार और मेहनत की जरूरत होती है, साथ ही बच्चों के सामने आने वाली कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है फिर भी, कई माता-पिता अपने बच्चों की परवरिश ठीक से नहीं कर पाते हैं। सकारात्मक पालन-पोषण माता-पिता और बच्चे या बच्चों के बीच एक निरंतर संबंध है जिसमें लगातार और बिना किसी शर्त के बच्चे की देखभाल करना, सिखाना, मार्गदर्शन करना, संवाद करना और उसकी जरूरतों को पूरा करना शामिल है। भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास और संस्कृति में भारतीय माता-पिता की पालन-पोषण की शैलियाँ अनूठी हैं। परिवार के विभिन्न सदस्यों की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से निर्धारित होती हैं और पीढ़ियों से चली आ रही हैं – पिता कमाने वाले मुखिया होते हैं और माता गृहिणी होती हैं। उनके इर्द-गिर्द संयुक्त परिवार के सदस्यों का एक विशाल नेटवर्क होता है जो बच्चे के लालन-पालन में योगदान देता है। हालाँकि, बढ़ती शिक्षा और सांस्कृतिक गतिशीलता के कारण कुछ लोगों के लिए पेरेंटिंग शैलियाँ बदल गई हैं, लेकिन सामाजिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि अधिकांश लोगों के लिए भारतीय परिवार की घरेलू गतिशीलता वैसी ही बनी हुई है।



मुख्य शब्द: परवरिश, माता-पिता, व्यवहार, पालन-पोषण और संस्कृति.

परिचय

शिक्षा मानव विकास सूचकांक में विकास के संकेतकों में से एक है। लेकिन समाज के कुछ लोगों को इससे गंभीर रूप से वंचित रखा गया है। हालाँकि, सरकार और अन्य स्वैच्छिक संगठनों के कुशल प्रयासों से शिक्षा भारतीय समाज के सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर मौजूद लोगों तक पहुँच गई है। जनजाति (आदिवासी) उनमें से एक है; भारत के अन्य समुदायों की तुलना में शैक्षिक विकास के राष्ट्रीय औसत में उनकी स्थिति निम्न है। यह स्थिति इस समुदाय को अलग-थलग कर देती है और समाज की मुख्यधारा में प्रवेश करने

से रोकती है। पालन-पोषण की शैली एक समग्र प्रक्रिया है जो बच्चे के विकास और परिणामों को प्रभावित करने के लिए मुख्य रूप से व्यक्तिगत रूप से और एक साथ कई विशिष्ट तौर-तरीकों को उजागर करती है। पेरेंटिंग स्टाइल बच्चे के लालन-पालन के दो महत्वपूर्ण तत्वों को समाहित करती है। बच्चों की परवरिश एक ऐसा सफर है जिसमें कई अहम फैसले लेने पड़ते हैं, जो बच्चे का भविष्य तय करते हैं। माता-पिता के तौर-तरीके, जिन्हें पेरेंटिंग स्टाइल कहा जाता है, बच्चे के विकास और मानसिक सेहत पर बहुत असर डालते हैं। इन तरीकों और उनके असर को समझने से माता-पिता या देखभाल करने वालों को अपने बच्चों के लिए बेहतर माहौल बनाने में मदद मिल सकती है। बच्चों की परवरिश एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है; बच्चा अपने माता-पिता के व्यवहार और भविष्य के कामों के लिए अपनी क्षमताओं के संपर्क में रहकर ही अपना जीवन बिताता है।

घर और परिवार को बनाने में महिलाओं की भूमिका बहुत अहम होती है। बच्चों की परवरिश का तरीका हर देश और हर सामाजिक समूह में अलग-अलग होता है। अलग-अलग इलाकों में संस्कृतियों और समुदायों में आदिवासी परिवारों के बच्चों की परवरिश के तरीकों में काफी अंतर होता है। सभी आदिवासी परिवारों के लिए परवरिश का एक ही तरीका बताना सही नहीं होगा क्योंकि हर आदिवासी समूह की अपनी परंपराएं मूल्य और बच्चों की परवरिश के तौर-तरीके होते हैं। फिर भी रिसर्च करने वालों ने कई आदिवासी समुदायों में कुछ एक जैसे पैटर्न की पहचान की है। माता-पिता एक अहम व्यक्ति होते हैं जिनका बच्चे के जीवन पर बहुत गहरा असर पड़ता है। बच्चों की परवरिश वह प्रक्रिया है जिसमें बच्चे के बचपन से लेकर बड़े होने तक उसके शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा दिया जाता है और उसे प्रोत्साहित किया जाता है। यह व्यवहार का एक खास तरीका है जिसे माता-पिता बच्चे की परवरिश के लिए अपनाते हैं। बच्चे के विकास में माता-पिता की अहम भूमिका होती है। हर माता-पिता का परवरिश का तरीका अलग होता है। उनका अपना नज़रिया व्यवहार, मान्यताएं, मूल्य और पारिवारिक पृष्ठभूमि होती है। इसलिए परवरिश के नतीजे भी अलग-अलग होते हैं। माता-पिता और बच्चे के रिश्ते का महत्व सामाजिक क्षमता सीखने के कौशल, शैक्षणिक उपलब्धि, आक्रामक व्यवहार, अपराधवृत्ति आदि से गहराई से जुड़ा होता है। सकारात्मक पालन-पोषण किशोरों में विभिन्न गुणों को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन गुणों में आत्मविश्वास, लचीलापन, रचनात्मकता और योग्यता शामिल हैं। सकारात्मक पेरेंटिंग किशोरों को उत्साह और जवाबदेही के साथ जीवन का सामना करने के लिए सशक्त बनाती है (रोपर, 2016)। आदिवासी समुदायों के किशोरों को एक सुरक्षित और प्रोत्साहन से भरा माहौल देकर उनकी योग्यताओं को विकसित किया जा सकता है और उनके आत्म-सम्मान को बढ़ाया जा सकता है, जहाँ वे अपने विचार व्यक्त कर सकें, अपनी पहचान तलाश सकें और आत्मविश्वास हासिल कर सकें।

सकारात्मक पेरेंटिंग व्यक्तियों को रोजमर्रा की जिंदगी की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाती है। सकारात्मक पेरेंटिंग व्यक्तियों को खुद को समझने और अपनी ताकत व कमियों का आकलन करने के लिए सशक्त बनाती है, ताकि वे अपनी क्षमताओं को मजबूत करने के लिए अपनी कमियों पर काम कर सकें। बच्चे की परवरिश का कोई एक ही सही तरीका नहीं होता। माता-पिता अलग-अलग तरीकों से बच्चों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास से भरा बना सकते हैं। हालाँकि, रिसर्च में बार-बार एक बात सामने आई है। बच्चे की अच्छी परवरिश के लिए माता-पिता की देखभाल और उसमें शामिल होना बहुत जरूरी है। साफ नियम बनाने और बच्चों के साथ मिलकर चुनौतियों का सामना करने से सबसे अच्छे नतीजे मिलते हैं। हर माता-पिता, चाहे उन्हें इसका एहसास हो या न हो, इंसानी विकास की सबसे अहम मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में से एक है। बच्चों की परवरिश में शामिल होते हैं। बच्चों को जिस तरह से गाइड किया जाता है, अनुशासन सिखाया जाता है, उनकी देखभाल की जाती है और उन्हें सिखाया-पढ़ाया जाता है, उससे न सिर्फ उनके व्यवहार, बल्कि उनकी पूरी पर्सनैलिटी, नैतिक समझ और समाज में काम करने की क्षमता भी तय होती है।

बच्चे के विकास में पेरेंटिंग का महत्व

अच्छी पेरेंटिंग बच्चे में अलग-अलग तरह के माहौल में फलने-फूलने की क्षमता विकसित करती है, जिससे वे चुनौतियों का सामना करने और मौकों का फायदा उठाने के लिए जरूरी कौशल सीख पाते हैं। इसके अलावा, परिवार की सही या अनुकूल प्रक्रियाएँ बच्चे के विकास में तरक्की को बढ़ावा दे सकती हैं और साथ ही विकास से जुड़ी उन कमियों को रोक सकती हैं, जिनके कारण व्यवहार, भावनाओं और पढ़ाई-लिखाई से जुड़े

बुरे नतीजे सामने आ सकते हैं। परवरिश की शैलियाँ (पैरेंटिंग स्टाइल्स) बच्चे के अटैचमेंट थ्योरी फाउंडेशन (आसक्ति सिद्धांत की नींव) और भावनात्मक विनियमन क्षमताओं को प्रभावित करती हैं। आधिकारिक (ऑथोरिटेटिव) संवेदनशीलता सुरक्षित आधार के प्रभुत्व और बेहतर भावनात्मक विनियमन को भी प्रोत्साहित करती है क्योंकि माता-पिता की गर्मजोशी और उनका व्यवहार बच्चों को अपनी भावनाओं को उचित रूप से नियंत्रित करना सिखाने के लिए सीमाएँ तय करता है। दूसरी ओर, सख्त अनुशासन वाली सत्तावादी (ऑथोरिटेरियन) परवरिश का बच्चों की भावनात्मक भलाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और यह उनके भावनात्मक मुकाबला करने के तंत्र (इमोशनल कोपिंग मैकेनिज्म) के निर्माण को बाधित करती है। अनुमत (परमिसिव) परवरिश द्वारा जिस प्रकार के समाजीकरण को बढ़ावा दिया जाता है, उसके कारण बच्चे खराब संघर्ष-समाधान कौशल सीखते हैं क्योंकि इसमें उचित प्रतिबंध नहीं होते हैं। चारों में से सबसे खराब परवरिश शैली लापरवाह है, और जो पिता अपने बच्चों के साथ समय नहीं बिताते, उनके बच्चों के दोस्त बहुत कम होते हैं, वे दूसरों की भावनाओं को समझ नहीं पाते हैं, और न ही उनके साथ उचित तरीके से बातचीत कर पाते हैं। परवरिश की शैलियाँ आनुवंशिक प्रवृत्ति (जेनेटिक प्रीडिसपोजिशन) के साथ परस्पर क्रिया करती हैं, जो बाल विकास के परिणामों को आकार देने में प्रकृति और पालन-पोषण के बीच की जटिल परस्पर क्रिया को उजागर करती हैं। स्वभाव मुख्य रूप से जीन, तथा संज्ञानात्मक और भावनात्मक भागफल (क्विएंट) द्वारा निर्धारित होता है, जबकि ये विशेषताएँ किस प्रकार प्रदर्शित होती हैं, यह परवरिश की शैली पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, चिंता (एंग्जायटी) के आनुवंशिक घटक वाले बच्चे आधिकारिक घरों में कम लक्षण प्रदर्शित करेंगे क्योंकि वहाँ आवश्यक समर्थन के साथ संरचनाएँ प्रदान की जाती हैं।

दूसरी ओर, सत्तावादी या लापरवाह माता-पिता की देखभाल इस तरह की स्थिति को और खराब कर सकती है क्योंकि बच्चे की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक भलाई को आकार देने में परवरिश एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह निर्धारित किया गया है कि परवरिश और आनुवंशिकी का एक पारस्परिक संबंध होता है, जिसका अर्थ है कि जहाँ कुछ जीन विशिष्ट परिणामों का कारण बन सकते हैं और विशिष्ट परवरिश व्यवहारों को ट्रिगर कर सकते हैं, वहीं सामान्य विकासात्मक पैटर्न भी प्रभावित होते हैं। समकालीन परवरिश में मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ एक गंभीर चिंता का विषय हैं। तनाव, चिंता या अवसाद से पीड़ित परिवार अपने बच्चों के साथ नरमी से पेश नहीं आ पाते हैं और संवेदनशील समाजीकरण प्रतिक्रियाएँ देने में असमर्थ हो सकते हैं। इसलिए, उनके बच्चों की भावनात्मक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

आदिवासी परिवारों में बच्चों की परवरिश के तरीके

- सहयोगी और मार्गदर्शन करने वाले
- कई आदिवासी परिवार बच्चों को कड़ी सजा देने के बजाय मार्गदर्शन के ज़रिए प्रोत्साहित करते हैं।
- माता-पिता अक्सर कहानी सुनाने, देखकर सीखने और सामुदायिक जीवन में भाग लेने के ज़रिए ईमानदारी, सहयोग और सम्मान जैसे मूल्य सिखाते हैं।
- बच्चों को उनकी उम्र के हिसाब से ज़िम्मेदारियाँ दी जाती हैं जिससे उनमें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास बढ़ता है।
- सामूहिक परवरिश
- बच्चों की परवरिश अक्सर माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची, मामा-मामी और समुदाय के अन्य सदस्यों की सामूहिक ज़िम्मेदारी होती है।
- यह सामूहिक तरीका सामाजिक रिश्तों को मज़बूत करता है और बच्चों को कई रोल मॉडल देता है।
- भाग लेकर सीखना
- बच्चे खेती, शिकार, चीज़ें इकट्ठा करने, शिल्प और घर के कामों जैसी रोज़मर्रा की गतिविधियों को देखकर और उनमें भाग लेकर सीखते हैं।
- सांस्कृतिक परंपराओं और रीति-रिवाजों के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल पर भी ज़ोर दिया जाता है।
- बुजुर्गों और परंपरा का सम्मान
- आदिवासी परिवार आम तौर पर बुजुर्गों का सम्मान करने और सांस्कृतिक विरासत को संजोकर रखने पर बहुत ज़ोर देते हैं।

➤ पारंपरिक ज्ञान ए रीति.रिवाजए भाषा और परंपराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती हैं।

कुछ आदिवासी समुदायों में, छोटे बच्चों को अपने आस.पास की दुनिया को जानने.समझने के लिए काफी आजादी दी जाती है। अनुशासन बनाए रखने के लिए कड़ी सज़ा के बजाय सामाजिक उम्मीदों और स्वाभाविक नतीजों पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है।

आदिवासी परिवारों में पालन.पोषण पर असर डालने वाले कारक

- ✓ सांस्कृतिक मान्यताएँ और परंपराएँ
- ✓ आर्थिक हालात और आजीविका
- ✓ माता.पिता की शिक्षा का स्तर
- ✓ स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सेवाओं तक पहुँच
- ✓ मुख्यधारा के समाज के साथ मेल.जोल का स्तर
- ✓ सरकारी नीतियाँ और आधुनिकीकरण

आदिवासी पालन.पोषण की खूबियाँ

- 🏡 परिवार और समुदाय का मज़बूत सहयोग
- 🏡 सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखना
- 🏡 रोज़मर्रा की जिंदगी के व्यावहारिक कौशल का शुरुआती विकास
- 🏡 परिवार के करीबी रिश्तों से भावनात्मक सुरक्षा
- 🏡 अपनापन और सहयोग की मज़बूत भावना

चुनौतियाँ

- कुछ समुदायों में गरीबी और शिक्षा के सीमित अवसर
- प्रवास और शहरीकरण के असर
- पारंपरिक तौर.तरीकों और आधुनिक शिक्षा व तकनीक के बीच संतुलन बनाना
- कुछ इलाकों में स्वास्थ्य सेवा और बच्चों के विकास की सेवाओं तक सीमित पहुँच

निष्कर्ष

बचपन के शुरुआती दौर को लंबे समय तक चलने वाले सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए सबसे अहम चरण माना गया है। बच्चे का विकास उस माहौल, जिंदगी के अनुभवों और परिवार पर निर्भर करता है जिसमें वह बड़ा हो रहा है। बचपन का शुरुआती समय वह दौर है जब बच्चे अपने आपसी संबंध बनाने के कौशल (इंटरपर्सनल स्किल्स) विकसित करते हैं, बाहरी दुनिया के बारे में सीखते हैं, और अपनी भावनाओं व व्यवहार पर काबू पाना सीखते हैं। इसलिए, सकारात्मक पालन-पोषण (पॉजिटिव पेरेंटिंग) वह सबसे अहम कारक है जो बच्चे के व्यक्तित्व पर असर डालता है। बचपन से लेकर किशोरावस्था तक बच्चे के शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने और उसमें मदद करने में माता-पिता और स्कूल, दोनों ही अहम भूमिका निभाते हैं। आदिवासी परिवारों में बच्चों की परवरिश की मुख्य विशेषताएं हैं . समुदाय की मज़बूत भागीदारीएँ सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मानएँ बच्चों की देखभाल में मिल.जुलकर योगदान और अनुभव से सीखना। हालांकि अलग.अलग आदिवासी समूहों में परवरिश के तरीके अलग.अलग हो सकते हैं। लेकिन कई समूह सहयोगएँ सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने और बच्चे के सर्वांगीण विकास पर जोर देते हैं। आधुनिक सामाजिक और आर्थिक बदलाव इन तरीकों को प्रभावित कर रहे हैं। जिसके कारण कई परिवार पारंपरिक मूल्यों और आज के दौर के परवरिश के तरीकों को मिलाकर अपना रहे हैं।

बच्चों की जिंदगी में उनकी कामयाबी पर पेरेंटिंग स्टाइल का बहुत असर पड़ता है। जो माता-पिता अथॉरिटेटिव (समझदार और सहयोगी) होते हैं, उनके बच्चे जिंदगी में कामयाब होते हैं क्योंकि ऐसे माता-पिता बच्चों को सपोर्ट करते हैं और उन्हें अपनी भावनाएं या विचार बताने की आजादी देते हैं। वहीं, जो माता-पिता अथॉरिटेरियन (सख्त) होते हैं, उनके बच्चे अक्सर सपोर्ट की कमी महसूस करते हैं क्योंकि ऐसे माता-पिता बच्चों

के प्रति बहुत सख्त होते हैं। अगर बच्चा बात नहीं मानता, तो वे उसे सजा देते हैं। अथॉरिटेटिव माता-पिता बच्चे को आज्ञा दी देते हैं, और परमिसिव (छूट देने वाले) माता-पिता बच्चे के साथ दोस्त जैसा व्यवहार करते हैं। अगर बच्चा स्कूल नहीं जाता, तो अनइनवॉल्व्ड (उदासीन) माता-पिता शायद कोई प्रतिक्रिया भी न दें। इसलिए, माता-पिता को सही पेरेंटिंग स्टाइल अपनाकर बच्चों की परवरिश करनी चाहिए। बच्चे ज्यादातर समय घर पर ही बिताते हैं। माता-पिता का रवैया, व्यवहार और बच्चों के साथ बातचीत उनके भविष्य पर गहरा असर डालती है। अगर माता-पिता बहुत ज्यादा सख्त हों, तो इसका बच्चे की जिंदगी पर बुरा असर पड़ता है, जबकि सहयोगी और देखभाल करने वाले माता-पिता बच्चों को स्वस्थ और खुशमिजाज बनाते हैं। अलग-अलग तरह के पेरेंटिंग स्टाइल को समझने और अपनाने से बच्चे के विकास और मानसिक स्वास्थ्य पर काफी असर पड़ सकता है। हालाँकि हर स्टाइल की अपनी खासियतें और संभावित प्रभाव होते हैं, लेकिन अलग-अलग तरीकों को मिलाकर एक ऐसा संतुलित तरीका अपनाया जा सकता है जो बच्चे की जरूरतों के हिसाब से हो।

संदर्भ

1. रोपर, एम. (2016). पॉजिटिव पेरेंटिंग (सकारात्मक पालन-पोषण)। डिपार्टमेंट ऑफ साइकियाट्री एंड मेंटल हेल्थ, यूनिवर्सिटी ऑफ केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका।
2. मोलुगुरी श्रव्या, जी. स्वरूपा रानी, पी. श्रीदेवी और एम. प्रसन्ना (2023). रिलेशनशिप बिटवीन पॉजिटिव पेरेंटिंग एंड सेल्फ-इस्टीम ऑफ ट्राइबल एडोलेसेंट्स (सकारात्मक पालन-पोषण और आदिवासी किशोरों के आत्म-सम्मान के बीच संबंध)। बायोलॉजिकल फोरम – एन इंटरनेशनल जर्नल, 15(8): 426–428।
3. कन्ननए आर., और चंद्रहासन, पीण् (2024) बॉमरिड के पेरेंटिंग सिद्धांत के माध्यम से वेरोनिका रोथ की डाइवर्जेंट श्रृंखला में पेरेंटिंग के प्रतिमानों का अनावरण। ईबीएससीओहोस्ट (EBSCOhost), Ebsco.com, 15(1), 291।
4. लेवेस्क, एस., बिसन, वी, चार्टन, एल, और फर्नेट, एम् (2020) माता.पिता बनने के संक्रमण के दौरान पालन.पोषण और संबंधपरक कल्याणरु पहली बार माता.पिता बनने वालों के लिए चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड फैमिली स्टडीज (J Child Family Studies), 29, 1938.56।